आर्थिक नियोजन के उद्देश्य
(OBJECTIVES OF ECONOMIC PLANNING)

आर्थिक नियोजन के अनेक उद्देश्य हैं जिनको भिन्न-भिन्न विद्वानों ने भिन्न-भिन्न प्रकार से प्रस्तुत किया है। जैसे **वाडिया** एवं **मर्चेण्ट** (Wadia & Merchant) ने नियोजन के उद्देश्य इस प्रकार बताये हैं—"**मनुष्य के रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठाना, आर्थिक साधनों का समुचित उपयोग करके उनका बहुमुखी विकास करना, सुखी एवं समृद्ध जीवन की सम्भावनाओं को बढ़ाना, देश में परिवहन साधनों का समुचित प्रबन्ध करना, गृह उद्योगों को विकसित करना, ग्राम्य जीवन को सुविधाजनक बनाना एवं विस्तृत बाजारों का विकास करना है।**" जबकि **आर्देशिर दलाल** (Ardeshir Dalal) का विचार है कि "**आर्थिक नियोजन का उद्देश्य उत्पादन का अधिकाधिक सम्भव सीमा तक विकास करना एवं जनसाधारण के रहन-सहन के स्तर को ऊँचा उठाना है।**" संक्षेप में **आर्थिक नियोजन के उद्देश्यों को मुख्य रूप से तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है—(I) राजनीतिक उद्देश्य, (II) आर्थिक उद्देश्य व (III) सामाजिक उद्देश्य।**

Scanned with CamScanner

(I) राजनीतिक उद्देश्य

आर्थिक नियोजन में प्रारम्भ से ही राजनीतिक उद्देश्यों की प्रधानता रही है, जैसे रूस की प्रथम व द्वितीय पंचवर्षीय योजनाएँ मुख्य रूप से राजनीतिक थीं। नाजियों की नियोजित अर्थव्यवस्था (Nazi Planned Economy) भी राजनीतिक आन्दोलन का एक भाग थी। लगभग सभी देशों में प्रारम्भिक योजनाएँ राजनीतिक उद्देश्यों को लेकर ही बनायी गयी थीं। **राजनीतिक उद्देश्य भी अनेकों होते हैं लेकिन मुख्य निम्न हैं :**

(1) **सुरक्षात्मक**—संसार के सभी देश अपनी सुरक्षा को सबसे अधिक महत्व देते हैं। अतः बाहरी आक्रमण से बचने के लिए उनके द्वारा आर्थिक नियोजन का सहारा लिया जाता है। वे अपनी सैनिक शक्ति का विस्तार करते हैं और आधुनिकतम रक्षा सामग्री का या तो स्वयं निर्माण करते हैं या उसका आयात करते हैं। भारत पर 1962 में चीन व 1965 में पाकिस्तान ने हमला किया। अतः इस काल में भारतीय नियोजन का मुख्य उद्देश्य देश की सुरक्षा हो गया। अतः सुरक्षात्मक नियोजन किया गया। किसी भी देश का आर्थिक विकास बिना उसकी सुरक्षा के नहीं हो सकता है।

(2) **आक्रामक** (Aggressive)—आर्थिक नियोजन का उद्देश्य आक्रामक उद्देश्य भी हो सकता है। संसार में इस प्रकार के कई ज्वलन्त उदाहरण हैं। इटली में मुसोलिनी द्वारा व नाजी जर्मनी में हिटलर द्वारा यही उद्देश्य अपनाकर आर्थिक नियोजन किया गया था। इन देशों के तानाशाहों ने अपनी सैनिक शक्ति अपने क्षेत्र का विस्तार करने के लिए बढ़ायी थी। आजकल इस उद्देश्य को लेकर नियोजन करना उचित नहीं माना जाता है। यह उद्देश्य तो सुरक्षात्मक उद्देश्य में ही सम्मिलित रहता है। इसको अलग से व्यक्त नहीं किया जाता है।

(3) **आन्तरिक राजनीति**—आजकल सत्तारूढ़ दल द्वारा नियोजन का उपयोग देश की आन्तरिक राजनीति में अपने प्रभुत्व को बनाये रखने या बढ़ाने के लिए किया जाता है। यह बात साम्यवादी व तानाशाही राष्ट्रों पर अधिक सत्य उतरती है। पूर्व सोवियत संघ में स्टालिन के व्यक्तित्व के उभरने का मुख्य कारण भी यही था। भारत में कुछ प्रजातान्त्रिक मान्यताएँ, व्यवस्थाएँ व संस्थाएँ हैं जो इस प्रकार के उद्देश्यों पर कुछ अंकुश लगाये हुए हैं, लेकिन फिर भी यह एक औजार है जिसका उपयोग कोई भी राजनीतिक शक्ति कर सकती है।

(II) आर्थिक उद्देश्य

आर्थिक नियोजन के आर्थिक उद्देश्य एक नहीं अनेक हैं। ये उद्देश्य निम्न प्रकार हैं :

(1) **पूर्ण रोजगार**—आर्थिक नियोजन का प्रमुख उद्देश्य पूर्ण रोजगार का प्रबन्ध करना है। यदि किसी देश में पूर्ण रोजगार नहीं है अर्थात् बेरोजगारी है तो आर्थिक समानता का लाभ नहीं मिल सकता है। जिससे समाज में अनेक बुराइयाँ पैदा हो सकती हैं। अतः आर्थिक नियोजन का उद्देश्य बेकार पड़े हुए साधनों का सर्वोत्तम उपयोग कर उत्पादन में वृद्धि करना, औद्योगीकरण का विकास करना तथा प्रति व्यक्ति आय में वृद्धि करना है।

(2) **आय की समानता**—आर्थिक नियोजन का एक उद्देश्य आय की समानता करना भी है। इसमें अमीर व गरीब के बीच की खाई पाटी जाती है। अमीरों पर अधिक कर लगाये जाते हैं तथा गरीबों के कल्याण पर भारी राशि व्यय की जाती है।

(3) **अवसर की समानता**—नियोजन का उद्देश्य देश के प्रत्येक नागरिक को अवसर की समानता प्रदान करना है। इससे उत्पादन, विनिमय एवं वितरण की स्थिति को सुधारा जा सकता है। अर्थव्यवस्था के दोषों को दूर किया जा सकता है। इसके लिए सरकारी क्षेत्र का अधिकाधिक विकास किया जा सकता है। कर प्रणाली परिवर्तित की जा सकती है। सामाजिक परिवर्तन लाया जा सकता है।

(4) **अधिकतम उत्पादन**—अधिकतम उत्पादन नियोजन का प्रमुख उद्देश्य होता है। ऐसा करने से जन समुदाय के जीवन-स्तर में वृद्धि होती है क्योंकि राष्ट्रीय उत्पादन में वृद्धि ही जनकल्याण में सहायक होती है।

(5) **सन्तुलित विकास**—आर्थिक नियोजन का उद्देश्य अर्थव्यवस्था का बहुमुखी विकास करना भी होता है। इसमें अर्थव्यवस्था के सभी क्षेत्रों में विकास किया जाता है। लेकिन पिछड़े क्षेत्रों पर अधिक ध्यान दिया जाता है तथा सामाजिक समानता व सन्तुलन को स्थापित किया जाता है।

(6) **युद्धोपरान्त पुनर्निर्माण**—युद्ध के उपरान्त अर्थव्यवस्था के सुधार एवं पुनः निर्माण के लिए भी आर्थिक नियोजन किया जा सकता है। इसमें उद्योगों व परिवहन का पुनः निर्माण किया जाता है। नये-नये उद्योग स्थापित किये जाते हैं। सुरक्षा व्यवस्था मजबूत की जाती है तथा बेरोजगारी कम करने का प्रयत्न किया जाता

Scanned with CamScanner

है। द्वितीय विश्वयुद्ध के उपरान्त रूस की पंचवर्षीय योजनाएँ इसी प्रकार की थीं। इन योजनाओं का उद्देश्य जनसाधारण की आय में वृद्धि करना भी होता है।

(7) **उच्च जीवन-स्तर**—नियोजन जनसाधारण को उच्च जीवन-स्तर प्रदान करने के लिए भी किया जाता है। इसके लिए उत्पादन बढ़ाया जाता है, नवीन आधुनिक वस्तुओं का निर्माण प्रारम्भ किया जाता है तथा सार्वजनिक वितरण व्यवस्था सुधारी जाती है।

(8) **विदेशी बाजारों पर प्रभुत्व**—आर्थिक नियोजन इस उद्देश्य से भी किया जाता है कि विदेशी बाजारों के लिए आवश्यक उत्पादन किया जा सके तथा विदेशों को आर्थिक सहायता दी जा सके। आजकल विकसित देशों में नियोजन इसी उद्देश्य से किया जाने लगा है जिससे कि वे विदेशों में बाजारों के प्रभुत्व के साथ-साथ राजनीतिक प्रभुत्व भी जमा सकें।

(9) **बेकार साधनों का उपयोग**—आर्थिक नियोजन देश के बेकार साधनों का उपयोग कर राष्ट्र का तीव्र विकास करने के लिए भी हो सकता है।

(10) **आत्मनिर्भरता**—आर्थिक नियोजन आत्मनिर्भरता प्राप्त करने के उद्देश्य से भी किया जा सकता है। आत्मनिर्भरता का अथ हैं स्वयं पर निर्भर रहना अर्थात् विदेशी सहायता का सहारा न लेना।

(III) सामाजिक उद्देश्य

आर्थिक नियोजन के सामाजिक उद्देश्यों को आर्थिक व राजनीतिक उद्देश्यों से पृथक् नहीं किया जा सकता है। यह सभी एक-दूसरे के विरोधी न होकर पूरक हैं। संक्षेप में सामाजिक उद्देश्य निम्न प्रकार हो सकते हैं :

(1) **समाजवादी समाज की स्थापना**—आर्थिक नियोजन समाजवादी समाज की स्थापना के उद्देश्य से भी किया जा सकता है जिसके अन्तर्गत आय व सम्पत्ति की असमानताएँ दूर की जाती हैं तथा सामाजिक न्याय देने का प्रयास किया जाता है। लघु एवं वृहत् उद्योगों का विकास किया जाता है। शक्ति, परिवहन व अन्य सामाजिक सेवाओं का विस्तार किया जाता है। राष्ट्रीय सम्पत्ति का समान वितरण भी इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए किया जाता है।

(2) **सामाजिक सुरक्षा**—आर्थिक नियोजन सामाजिक सुरक्षा प्रदान करने के लिए भी किया जाता है जिससे कि नागरिक परिश्रम व लगन से कार्य करें। इसके अन्तर्गत बेरोजगारी बीमा, चिकित्सा सुविधा, पेंशन, आदि की व्यवस्था की जाती है।

(3) **कल्याणकारी राज्य की स्थापना**—आर्थिक नियोजन कल्याणकारी राज्य की स्थापना करने के लिए भी किया जा सकता है।

Scanned with CamScanner